International Journal of History 2023; 5(2): 138-140

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2023; 5(2): 138-140
Received: 20-06-2023
Accepted: 30-07-2023

अनिल कुमार भाखर
शोधार्थी, गुरू गोविन्द जनजातिय विश्वविद्यालय, बांसवाड़ा, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
अनिल कुमार भाखर
शोधार्थी, गुरू गोविन्द जनजातिय विश्वविद्यालय, बांसवाड़ा, राजस्थान, भारत

शेखावाटी किसान आन्दोलन के प्रमुख प्रेरक कारक

अनिल कुमार भाखर

सारांश
बीसवीं सदी के पूर्वाद्ध में जयपुर रियासत के शेखावाटी क्षेत्र में कृषक वर्ग में जन चेतना का विकास आरम्भ हुआ। इससे पूर्व दीर्घकाल से सुषुप्त पड़ी किसान शक्ति आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक बदहाली एवं शोषण का शिकार रही। उसमें बाह्य एवं आंतरिक जन चेतना की प्रेरक शक्तियों का समावेश हुआ। इन प्रेरक तत्वों में चिड़ावा सेवा समिति, अमर सेवा समिति, आर्य समाज, भजनोपदेशक, शिक्षा, धार्मिक उत्सव एवं मेले आदि थे। किसानों, व्यापारियों, महिलाओं तथा कस्बों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में जन चेतना के विकास में इनका सराहनीय योगदान रहा। जिसके प्रमुख कारक निम्नलिखित थे।

कूटशब्दः किसान आन्दोलन, शोषण, जनचेतना, शिक्षा, धार्मिक उत्सव, मेले, जागीदार

प्रस्तावना

चिड़ावा सेवा समिति

सन् 1918 में वेणीप्रसाद डालमिया, गुलाबचन्द नेमाणी तथा प्यारेलाल गुप्ता ने चिड़ावा सेवा समिति की स्थापना की। जिन्होंने सामाजिक सेवा के साथ राजनैतिक जागृति का पाठ पढ़ाया। यह अकालों के समय ग्रामीण जनता की मूल्यवान सेवा करती थी। इस समिति ने किसानों की दुर्दशा के कठोर समय में सामाजिक कार्य आरम्भ किए। शेखावाटी के व्यापारिक वर्ग के पास अपार धन होते हुए भी किसी प्रकार के राजनीतिक एवं नागरिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। इन्होंने सामन्तवाद के खिलाफ संघर्ष हेतु इस समिति के माध्यम से किसानों को संगठित करना आरम्भ किया। इस समिति की शाखाएँ शेखावाटी के विभिन्न भागों में स्थापित की गई थी। जागीरदारों द्वारा किसानों की समस्याओं पर गौर नहीं करने से किसान इस समिति से जुड़ गए।

सितम्बर 1921 में चिड़ावा सेवा समिति ने विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार, शराब की दुकानों को बन्द करने तथा ठिकानेदारों के जन विरोधी आदेशों की अवहेलना करने आदि कार्यक्रमों के आधार पर आन्दोलन आरम्भ किया था। खेतड़ी के राजा अमरसिंह ने जनता के दिमाग पर आतंक स्थापित करने एवं समिति के प्रभाव को समाप्त करने के उद्देश्य से दमनात्मक कार्यवाही की। समिति के चालीस स्वयंसेवकों को गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तार व्यक्तियों के साथ अत्यधिक अमानवीय व्यवहार किया एवं उन्हें गैर कानूनी तरीकों से उत्पीड़ित किया था। गिरफ्तार लोगों पर बिना कोई अभियोग लगाए उन्हें एक पखवाड़े तक अवैध रूप से जेल के सीखचों में बन्दी बनाए रखा गया। इससे सभी क्षेत्रों में राजा के प्रति जनता में भारी रोष व्याप्त हो गया। उन्हें कलकत्ता तथा बम्बई की ऑल इण्डिया मारवाड़ी ट्रेडर्स एसोसिएशन (मारवाड़ी व्यापारी संघ) के हस्तक्षेप के पश्चात् ही रिहा किया गया। इस समय चिड़ावा के मूल निवासी ताराचन्द डालमिया अखिल भारतीय मारवाड़ी व्यापार संघ के अध्यक्ष थे। उन्होंने इस मामले में गवर्नर जनरल लार्ड रीडिंग का हस्तक्षेप करवाया था।

चिड़ावा के सेठ वेणीप्रसाद डालमिया को चिड़ावा आन्दोलन में सम्मिलित होने के कारण खेतड़ी जेल में भेज दिया गया। किन्तु सेठ जमनालाल बजाज, सेठ घनश्यामदास बिड़ला और अनेक राष्ट्र स्तरीय नेताओं के द्वारा पत्र लिखवाकर दबाव से खेतड़ी जेल से छोड़ा गया। जेल से छूटने के पश्चात् अधिक जोश के साथ जन जागरण में लग गए। उन्हीं की प्रेरणा से कस्बों के लोग शेखावाटी में जागीरी अत्याचारों और लाग–बागों के खिलाफ खड़े हो गए। कालान्तर में उनका सहयोग किसानों को मिला और देहातों से उन्हें भरपुर समर्थन मिला। वेणीप्रसाद का जन जागृति में योगदान विस्मरणीय रहा। मातादीन भगेरिया ने किसानों को अपने अधिकारों के लिए लड़ने की प्रेरणा प्रदान की।

अमर सेवा समिति

शेखावाटी अंचल में सन् 1922 में खेतड़ी ठिकाने में सेठ वेणी प्रसाद डालमिया तथा मा. प्यारेलाल गुप्ता आदि ने चिड़ावा में अमर सेवा समिति की स्थापना की गई। अमर सेवा समिति में लगभग 125 सदस्य थे।

उनमें वेणी प्रसाद डालमिया, प्यारेलाल गुप्ता, गुलाबचन्द नेमाणी, धर्मकिशोर श्रीवास्तव, हरिराम मिश्र, हरदेव दर्जी, हुकमाराम खाती आदि प्रमुख थे। ये स्वयं खादी पहनते थे और दूसरों को खादी धारण करने को प्रेरित करते थे। इस सेवा समिति के सदस्यों की पोशाक सैनिकों की तरह होती थी। सिर्फ इतना ही अन्तर था कि वह पोशाक खादी की थी और कन्धे पर कोई बैज नहीं था। यह सदस्य निरन्तर लाठी चलाना, परेड़ करना आदि का अभ्यास करते थे। रात्रि को इनकी मिटिंग होती थी और कमजोर तबके के लोगों में जाकर उनमें आत्मविश्वास पैदा करते थे। इस समिति का मुख्य उद्देश्य गौशालाओं, मेलों, उत्सवों, सार्वजनिक स्थानों पर पानी का प्रबंध, ठहरने की व्यवस्था करना, लड़ाई झगड़े रोकना, गरीब औरतों को चरखे मुहैया कराना, सामाजिक रूढ़िगत बुराईयों का विरोध करना तथा बेगार प्रथा का विरोध करना था।

खेतड़ी के ठाकुर ने बेगार के लिए लोगों को बुलाया तो उनमें सर्वप्रथम रामेश्वरप्रसाद नाई ने बेगार देने से साफ–साफ मना कर दिया। जिसके बाद समिति के सदस्यों की गिरफ्तारी हुई और उन पर अमानवीय अत्याचार किये गये जिससे किसानों में आक्रोश बढ़ा और चेतना का प्रार्दुभाव हुआ।

आर्य समाज

19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में स्वामी दयानन्द सरस्वती के राजस्थान में आगमन से आर्य समाज का प्रचार–प्रसार हुआ। राजस्थान में सर्वप्रथम आर्य समाज की स्थापना अजमेर में हुई। जिसमें सामाजिक कुरूतियों तथा धार्मिक आड़म्बरों को दूर करने के प्रयास किए गए। 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में राजस्थान का शेखावाटी क्षेत्र आर्य समाज की गतिविधियों का मुख्य केन्द्र रहा। आर्य समाज के उपदेशक दिल्ली, आगरा, मथुरा, मेरठ, पंजाब तथा हरियाणा से शेखावाटी आते थे। आर्य समाज की विचारधारा नगरीय क्षेत्र से प्रवेश कर ग्रामीण क्षेत्रों में पहुँची। आर्य समाज के इन धार्मिक मिशनरियों ने शेखावाटी के गाँव–गाँव तथा ढ़ाणी–ढ़ाणी में अपने भजनों के माध्यम से चेतना जागृत की। सामाजिक सुधार के लिए किसानों को उद्बोधित किया और तत्कालीन शासन व्यवस्था की विषमताओं पर प्रकाश डाला तथा उसमें बदलाव की समीचीनता पर बल दिया। सन् 1925 में शेखावाटी के किसानों ने गरीबी और विषमताओं के विरूद्ध आवाज उठाई थी।

भजनोपदेशक

शेखावाटी अंचल में 1920 ई. के पश्चात् भजनोपदेशकों की किसानों में जन चेतना में अहम भूमिका मिलती है। शेखावाटी में उत्तरप्रदेश, हरियाणा प्रान्तों से भजनोपदेशक आए थे। इन लोगों ने किसानों की दुर्दशा के लिए स्वयं का उत्तरदायित्व मानते हुए भजन सुनाने लगे। रात भर गाँव–गाँव तथा ढाणी–ढाणी में यह भजनोपदेशक अपने भजन कहते थे। बीच–बीच में कथा या छोटे–छोटे प्रहसन सुनाकर लोगों का मनोरंजन करते थे। विवाह–शादियों में आर्य समाज के भजन व व्याख्यान होते थे। जिस गाँव में भजन होते वहाँ आस–पास गाँव के किसान बड़ी संख्या में आ जाते थे। सभा में बहुत बड़ा जोश होता था। इस प्रकार इन भजनों का धीरे–धीरे यहाँ की जनता पर प्रभाव पड़ने लगा। हरियाणा, पंजाब, उत्तरप्रदेश तथा भरतपुर के भजनी शेखावाटी जनपद में आए। यह अधिकतर आर्य समाजी थे। बाहर से आए भजनोपदेशकों में पं. हुकमीचन्द, ठा. हुकमसिंह, ठा. झम्मनसिंह, पृथ्वीसिंह बेधड़क, बस्तीराम, धर्मपाल, गणपतराम, मोहरसिंह, तेजसिंह आदि थे तथा यहाँ पं. कालूराम शर्मा, पं. खेमराज शर्मा, चौ. जीवनराम, चौ. घासीराम, देवकरण पालौता, सूरजमल साथी गोठड़ा, आशाराम जेजुसर, तेजसिंह भड़ौन्दा कलां, लच्छूराम मीणा खजपुर, मालीराम, पं. दत्तूराम, हनुमानदास, तेजसिंह, चन्दगीराम आदि थे। इन भजनोपदेशकों ने भारत की गुलामी की जंजीर काटने के लिए अपने भजनों के माध्यम से आग उगलना शुरू किया। इन भजनोपदशेकों ने अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, मूर्तिपूजा, बाल–विवाह, दहेज प्रथा, मृत्यु भोज, श्राद्ध, अस्थि विसर्जन, नशे व धुम्रपान आदि का विरोध किया। इन्होंने किसानों को चरित्र निर्माण, निर्भीकता पा पाठ तथा नारी शिक्षा को विशेष महत्व दिया।

शेखावाटी अंचल में जीवनसिंह, मोहरसिंह एवं रामसहाय आदि गायकों के गीत भजन सम्पूर्ण शेखावाटी क्षेत्र में गूंजा करते थे। हरियाणा के दादा बस्तीराम के भजन अपनी अनोखी धुन और हरियाणवी तर्ज के कारण बहुत पसंद किए जाते थे। हरियाणा का दत्तूराम भी अच्छे भजन गाता था। हरियाणा के मंगताराम ने दहेज विरोधी भजन रागनियाँ गाई। इन रागनियों का शेखावाटी क्षेत्र में विशेषकर चिड़ावा, सूरजगढ़ तथा मुहाना क्षेत्रों में लोगों पर व्यापक असर हुआ। चौधरी जीवनराम बड़ी बुलंद आवाज में भजन गाते थे। मेलों–ठेलों, उत्सवों, जलसों तथा जागरणों में भजनोपदशेक अपने भजनों के द्वारा चेतना जागृत करने का कार्य करते थे। पृथ्वीसिंह बेधड़क किसानों को अन्नदाता कहते हुए उन्हें जगाने के लिए भजन गाते थे तथा महिलाओं में चरित्रवान बनने तथा जागृति के भजनों का गायन करते थे। हुकमीचन्द आर्य ने शेखावाटी में दुनिया में सबसे बुरी गुलामी से सम्बन्धित भजन गाए। हुकमीचन्द के भजन महिलाओं में जागृति लाने में सहायक सिद्ध हुए। तेजसिंह के भजन भारत माता को भिखारिन के रूप में भारतवासियों से भीख माँगते हुए प्रदर्शित किया गया है। इस भजन को सुनकर किसानों की आँखों में अश्रुधार बहने लगती और नौजवानों में जोश हिलोरें मारने लग जाता था। उमराव सिंह आर्य पचेरी ने 1945 ई. में जवानों को गौरवशाली होने से सम्बन्धित गायन किए। पं. बस्तीराम अपने भजनों के माध्यम से भारत भूमि तथा नारी की व्यथा को व्यक्त करते और लोगों में जागृती लाने के प्रयत्न किए।

शिक्षा

शेखावाटी में प्रवासी व्यापारियों ने शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिए पाठशालाओं की स्थापना की। यहाँ के व्यापारी ठिकानेदारों तथा जागीरदारों से बहुत परेशान थे और अवसर देखकर उनकी मनसा ग्रामीण किसानों में जागृति पैदा करने की थी। उनमें बहुत से किसान महात्मा गाँधी से प्रभावित होकर राष्ट्रीय विचारधारा में जुट गए। किसानों में चेतना जागृत करने वाली संस्था आर्य समाज को प्रवासी व्यापारियों से बहुत सम्बल मिला। उन्होंने पहले कस्बों तथा उसके पश्चात् बड़े–बड़े गाँवों में शिक्षा का प्रबन्ध किया। इन व्यापारियों ने जुगल किशोर बिड़ला, सेठ भागीरथ कानोड़िया, सेठ आनन्दीलाल पौद्धार, सेठ गोरखराम रामप्रताप चमड़िया, सेठ रामनारायण रूईया, सेठ रामकृष्ण डालमिया, सेठ राधाकृष्णन मारू, बद्रीनारायण सोढाणी आदि प्रमुख थे। यहाँ के शिक्षा क्षेत्र में प्रमुख योगदान व्यापारी घरानों में नवलगढ़ के पोद्धार, सेकसरिया, जयपुरिया, चिड़ावा के डालमिया, डूण्डलोद के गोयनका, चूड़ी अजीतगढ़ के नेमानी, मलसीसर के झुंझुनूवाला, रामगढ़ के रूईया, फतेहपुर के चमड़िया, बिसाऊ के पोदार, पिलानी के बिड़ला, सीकर के मारू सोढ़ाणी, गुढ़ा गौड़जी के मोदी, केड़िया, बगड़ के रूंगटा, मुकन्दगढ़ के कानोड़िया आदि का था। शिक्षा के क्षेत्र में कलकत्ता में मारवाड़ी रिलिफ सोसायटी का भी प्रमख योगदान था।

धार्मिक उत्सव एवं मेले

आर्य समाज के प्रभाव से किसानों का बाह्य जगत से विशेषकर ब्रिटिश प्रान्तों में व्यापक समाज सुधार सम्बन्धी विचारों तथा आन्दोलनों से सम्पर्क सम्भव हुआ। इनमें धार्मिक साधु और राजस्थान के परम्परागत धार्मिक उत्सवों तथा मेले प्रमुख थे। अपनी तीर्थ यात्राओं के समय ब्रिटिश भारत के धार्मिक पुनरूत्थानवादियों तथा समाज सुधारकों से परिचित हुए। वे यह

धारा अपने साथ शेखावाटी लेकर आए। नागौर, अजमेर–मेरवाड़ा तथा पंजाब के धार्मिक उत्सवों तथा मेलों में शेखावाटी के किसान भारी संख्या में सम्मिलित होते थे। ये मेले सामाजिक असन्तोष तथा राजनीतिक विरोध के आदान–प्रदान के लिए शेखावाटी के किसानों के मिलन स्थल बने। गाँवों के कुएँ ग्रामीण किसानों के गप–शप के केन्द्र होते थे। जिससे चेतना जागृत होती थी।

संदर्भ ग्रन्थ

1. सिंह, मोहन (1990) : शेखावाटी में स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास, पृ.सं. 180
2. शर्मा, सागरमल (1990) : चिड़ावा अतीत से आज तक, चिड़ावा, चिड़ावा शोध संस्थान, पृ.सं. 291
3. डिपॉजिट–इन्टरनल प्रोसीडिंग्स, जनवरी 1922, राष्ट्रीय अभिलेखागार, दिल्ली, पृ.सं. 27
4. सिंह, मोहन (1990) : वही, पृ.सं. 180
5. शर्मा, सागरमल (1990) : चिड़ावा अतीत से आज तक, चिड़ावा, चिड़ावा शोध संस्थान, पृ.सं. 176
6. शर्मा, रामगोपाल (2002) : राजस्थान में प्रजामण्डल आन्दोलन, भाग–3, जयपुर, राजस्थान स्वर्ण जयन्ती समारोह समिति, पृ.सं. 168
7. सिंह, मोहन (1990) : शेखावाटी में स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास, झुंझुनू, पृ.सं. 17
8. शर्मा, रामगोपाल (2002) : वही, भाग–3, पृ.सं. 89
9. सिंह, मोहन (1990) : वही, पृ.सं. 18
10. डॉ. घासीराम (2007) : किसान आन्दोलन जनित चेतना और स्वाधीनता संग्राम, जयपुर, आलेख पब्लिशर्स, पृ.सं. 144
11. गोदारा, पितरामसिंह (2014) : शेखावाटी में स्वाधीनता आन्दोलन व जनआन्दोलन में भजनोपदेशकों की भूमिका, झुंझुनू, डॉ. घासीराम वर्मा समाज सेवा समिति, पृ.सं.134
12. कसवा, राजेन्द्र (2012) : मेरा गाँव मेरा देश वाया शेखावाटी, जयपुर, कल्पना पब्लिकेशन, पृ.सं. 103
13. सिंह, शिवनाथ (2002) : शेखावाटी किसान आन्दोलन, झुंझुनू, चंवरा शहीद स्मारक समिति, पृ.सं. 140–141
14. डॉ. पेमाराम (1990) : शेखावाटी किसान आन्दोलन का इतिहास, जसनगर (नागौर), श्री गणेश सेवा समिति, पृ.सं. 32–33
15. सहीराम (1996) : एक अधूरी क्रान्ति, जयपुर वीर तेजा प्रकाशन, पृ.सं. 107
16. सिंह, मोहन (1990) : वही, पृ.सं. 26
17. डॉ. घासीराम (2007) : किसान आन्दोलन जनित चेतना और स्वाधीनता संग्राम, पृ.सं. 98